= आपने लिखा

आजीवन कैद की सज़ा काट रहे इस पाठक को संदर्भ के अंक निरंतर मिल रहे हैं। अंक 43 में 'नकल क्यों नहीं' लेख बच्चों के प्रति अपना व्यवहार कैसा होना चाहिए और अपने दायित्वों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है।

'किस्सा बांस के फूलों का' से बांस की उम्र और फूलों के खिलने में कई बरस लग जाते हैं, यह एक नई जानकारी मिली। बांस की जड़ों से स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं, शायद आपको आश्चर्य होगा लेकिन मैंने इन्हें खाया है।

कमल सिंग, पदम सिंग
यरवदा खुला कारागार
ज़िला पुणे, महाराष्ट्र

मैं गत तीन वर्षों से संदर्भ का पाठक हूं। चाहते हुए भी मैं संदर्भ के लेखों पर अपनी प्रतिक्रियाएं नहीं दे पाया। चाहे तो आप इसे मेरा आलस्य भी कह सकते हैं। मैं इस वर्ष अपने जनपद में शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत रहा और उस दौरान मुझे संदर्भ के पुराने अंकों के कई आलेखों से काफी मदद मिली। प्रशिक्षण के दौरान कई रोचक अनुभव मिले जिन्हें मैं शीघ्र ही आपके पास भेजने की कोशिश करुंगा।

हेमराज भट्ट 'बालसखा'
लंबगांव, उत्तरकाशी

संदर्भ के अंक 42 और 43 मिले। अंक 42 में 'क्या आप एक मज़ाकिया शिक्षक हैं?' 2002 NT - 7, खिसकती जाए ज़मीं .... जैसे लेख ज्ञानवर्धक लगे। जीवन में पहली बार मुझे पता चला कि महाद्वीप खिसक रहे हैं। बचपन से मैं यही सोचता था कि महाद्वीप स्थिर हैं। 9 ग्रहों के अलावा बहुत सारे छोटे ग्रह भी हैं, यह बात शायद विज्ञान के अध्यापक भी नहीं जानते हैं। ग्रहों की यह जानकारी मनोरंजक लगी। 'बच्चों का किताबघर' लेख तो दिल के तारों को छूकर रोमांचित कर गया। मैं पिछले एक साल से अपने खर्च पर स्कूल में बच्चों के लिए पुस्तकालय चलाने की कोशिश कर रहा हूं। इस लेख ने मेरी बहुत मदद की। 'लोहे पर जंग कैसे लगती है?' यह लेख भी जानकारी से भरा था।

इसी तरह अंक-43 में भी कई लेख अच्छे लगे जैसे – विज्ञान की पढ़ाई...., पाठ्यक्रम निर्माण...., विज्ञान से शांतिवाद तक...., आपने लिखा कॉलम में रमेश जांगिड़ का खत बहुत ही मनोरंजक लगा। उस खत से व्याकरण के महत्व का पता चलता है।

संदर्भ ज्ञान का खज़ाना है लेकिन संदर्भ का देरी से प्रकाशित होना बहुत बुरा लगता है। जितनी जल्दी हो सुधार की ज़रूरत है।

दिलशेर
गांव मंडीकलां (जींद), हरियाणा

संदर्भ के साथ मात्र परिचय एक गहरे रिश्ते में बदल गया है। शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक विधियों का समावेश करके

कम होते मौलिक लेख

अंक 44 प्राप्त हुआ। कुल मिलाकर अपने पूर्ववर्त्ती अंकों की तरह सुंदर और उपयोगी है। एक बात जो खटकने वाली है वह यह कि संदर्भ का प्रकाशन विलंबित चल रहा है। आपने दो महीनों की जगह चार महीने का एक अंक निकालकर भी इस विलंब की भरपाई करने की कोशिश की है जैसा कि अंक 44 के साथ हुआ है, लेकिन फिर भी यह अपने समय से पीछे है।

दूसरी बात है पत्रिका में धीरे-धीरे मौलिक सामग्री कम-से-कमतर होती जा रही है। इसी अंक को ले लीजिए। सारे लेखों में से मात्र दो या तीन लेख ही मौलिक हैं। बाकी सभी अनुवाद और साभार वाले लेख हैं। एकलव्य से जुड़े लोग मौलिक तौर पर क्यों नहीं लिख रहे या लिख पा रहे हैं इसे तो आप ही जाने। मुझे लगता है यही हाल रहा तो कुछ दिनों में पूरे संदर्भ में सभी लेख साभारवाले होंगे। फिर इसका नाम होना चाहिए साभार संदर्भ।

एक और बात, यह भाषा से जुड़ी बात है। लेखों में अक्सर हिन्दी की जगह मराठी शब्द मिलते हैं जैसे गुब्बारे के लिए फुग्गा। इसी अंक में एक जगह पोहा शब्द आया है। हिन्दी-भाषी इसका अर्थ नहीं समझेगा। हां, मध्यप्रदेश के वे ज़िले जो महाराष्ट्र से सटे हैं, वहां इसे लोग समझते होंगे। लेकिन बृहत्तर हिन्दी प्रदेशों के लोग इससे अनजान ही होंगे। वर्तनी की त्रुटियां भी आम हैं मसलन एक जगह 'स्त्रोत' के लिए 'स्त्रोत' छपा है। एक और गलती जो मैं सालों से नोट कर रहा हूं वह है 'पाठ्य' की जगह 'पाठ्य' लिखना। पाठ्य मराठी में लिखा जाता है। यह सही है या गलत इसे मराठी वाले जाने। वैसे उसे वहां भी गलत ही होना चाहिए। यहां मुंबई में मैंने देखा है कि लोग बाद वाले वर्ण को पहले लिखने लगे हैं और वह भी आधा जैसे: शुद्ध या शुद्ध को शुध्द। इस तरह की गलतियों की सूची लंबी हो सकती है। आशा है आप इस ओर ध्यान देंगे।

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र
होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एज्यूकेशन, मुंबई

आपने जो सवाल उठाए वे वाजिब हैं। संदर्भ को समय पर प्रकाशित करने की हमारी ओर से पूरी कोशिश रहती है। अन्य भाषाओं में प्रकाशित सामग्री लेने का मुख्य कारण है – हिन्दी के पाठकों को अन्य भाषाओं की स्तरीय सामग्री हिन्दी में पढ़ने को मिल सके। 'साभार संदर्भ' वाली प्रवृति से तो हम भी बचना चाहते हैं।

– सपादक मडल

उसे बेहतर बनाने का संदर्भ एवं एकलव्य संस्था का प्रयास अनुकरणीय है। संदर्भ में वो सब है जो हमें कुछ करने को प्रेरित करता है। मैं अपने मित्रों-परिचितों को 'संदर्भ' के बारे में बताता हूं एवं सदस्यता के लिए प्रेरित भी करता हूं। फिलहाल मैं शहर में कमरा लेकर पढ़ाई करता हूं अतः इतना पैसा नहीं बच पाता कि अन्य महंगी पत्रिकाएं खरीद सकूं। मेरा मानना भी है कि जिज्ञासा सदैव ही ज्ञान प्राप्ति की पहली मंज़िल है और संदर्भ जिज्ञासा बनाए रखती है।

अंक-42 मिला 'छोटे ग्रहों' पर लेख जानकारी पूर्ण था। महाद्वीपीय खिसकाव पर जानकारी व पृथ्वी के आधुनिक स्वरूप धारण करने के पीछे के सिद्धांत ज्ञानवर्धक हैं। हालांकि सभी सामग्री जिज्ञासा परक रहती है अतः कुछेक के बारे में लिखना अच्छा नहीं लगता।

मेरे ख्याल से 'संदर्भ' को सभी जगह उपलब्ध होना चाहिए जिससे लोग इससे परिचित हों। आज शिक्षा पर नए सिरे से मूलभूत कार्य करने की आवश्यकता है जिससे महज रटे-रटाए दिमाग नहीं एक आदर्श मानव का निर्माण हो सके। शिक्षा के सामाजिक सरोकारों को नकारना भी गलत है क्योंकि अच्छी शिक्षा अच्छे समाज के निर्माण की ओर एक कदम है। आज आवश्यकता है इस क्षेत्र में संगठित तरीके से कार्य किया जाए।

सामाजिक समस्याओं से आप अनभिज्ञ नहीं हैं। आज एक ओर अच्छी आधुनिक शिक्षा उपलब्ध है वहीं दूसरी ओर अक्षर ज्ञान को मोहताज लोग भी हैं, जो अपनी दो जून की रोटी की चिन्ता में अधिक घुले हैं। हमें सामाजिक समस्याओं पर भी सोचना होगा तभी शिक्षा के क्षेत्र में तरक्की हो पाएगी। परन्तु अकेले दम पर यह असंभव है। ज़रूरत है कदम-से-कदम मिलाने की।

कमलेश चन्द्र उप्रेती
नारायणनगर, पिथौरागढ़

क्या है इसके मायने

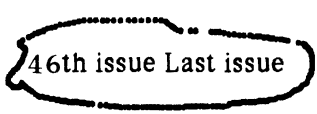

संदर्भ के वार्षिक सदस्यों के लिफाफे पर चिपकी पते वाली पर्ची पर ऊपर की तरह लिखा होता है। यदि आपकी पर्ची पर लिखा है 46th issue (Last issue) तो उसका अर्थ है कि आपकी सदस्यता 46वें अंक पर खत्म हो रही है। इसलिए अंक 45 मिलते ही अपनी वार्षिक सदस्यता का नवीनीकरण करवा लीजिए।